मौन
अंतर्मन से विश्व शांति तक

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 20 -26 September 2026

पितांबरी
देवभक्ती
अगरबत्ती
जहाँ श्रद्धा और भक्ति,
वहाँ महके
पितांबरी देवभक्ती!
Agarbatti with
Natural Ingredients
चंदन
गुलाब
मोगरा
Also available in
other fragrances.
Pitambari Products Pvt. Ltd.
Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 9886553105,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699, Toll Free: 18001031299
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314

अनुक्रमणिका

सह-अस्तित्व से विश्व शांति सम्भव	डॉ. नवीन कुमार मिश्र	04
मौन से निकलता समस्याओं का हल	विनीत उत्पल	06
चुप-चुप हो, जरूर कोई बात है!	रचना प्रियदर्शिनी	09
सामाजिक एकात्मता का पर्व	लवकुश तिवारी	11
ब्रिक्स की आवाज दुनिया में गूंजी	रंजीत कुमार	13
जेनेरिक व फार्मासिस्ट बेहतर स्वास्थ्य की साझेदारी	डॉ. शुभ्रता मिश्रा	16
नकली दवाइयों का कारोबार	डॉ. कृष्णा नंद पांडेय	18
जब यादें बिखरनें लगें	डॉ. मोनिका शर्मा	20
बाईक की सवारी पे मन डोले...	दीपक कुमार द्विवेदी	22
पहले रील्स फिर काम	सोनम लववंशी	25
युग निर्माण के प्रवर्तक आचार्य श्रीराम शर्मा	संकलन	27
एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय	विजय कुमार	28
इधर भी देखें...	संकलन	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067 फोन नं. : 022-28675299, 022-28678933

डॉ. नवीन कुमार मिश्र

सह-अस्तित्व से विश्व शांति सम्भव

सहयोग

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में युद्ध, हथियारों की होड़ और महाशक्तियों की वर्चस्व की आकांक्षा विश्व शांति के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गई है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को अपनाकर सह-अस्तित्व और सहयोग की राह पर चलने से ही विश्व में अशांति को दूर किया जा सकता है।

सुरक्षा किसी एक शक्तिशाली राज्य का विशेषाधिकार नहीं है, बल्कि प्रत्येक राज्य का अधिकार है। दुनिया शांति चाहती है, परंतु वर्तमान परिदृश्य युद्ध, सैन्य गठबंधनों, हथियारों का प्रदर्शन और वर्चस्व की राजनीति करने वाला दिखाई दे रहा है। अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय शक्तियां आज की विश्व राजनीति की महत्वपूर्ण धुरी हैं। इनके पास आर्थिक ताकत, सैन्य क्षमता, तकनीकी सामर्थ्य और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को प्रभावित करने की व्यापक क्षमता है। विशेष रूप से अमेरिका की आर्थिक, सैन्य और कूटनीतिक निर्णयों का प्रभाव सभी महाद्वीपों पर पड़ता है। चीन और रूस का भी प्रभाव वैश्विक है। परंतु युद्ध की मानसिकता, वर्चस्व की आकांक्षा तथा संसाधनों पर नियंत्रण के अलावा आतंकवाद व कट्टरता जैसे कारक विश्व शांति में बाधक हैं। वर्तमान में महाशक्तियां अपने विस्तार व प्रभाव को बढ़ाने में लगी हुई हैं, जिससे दूसरे देशों की सम्प्रभुता को चोट पहुंचती है। विश्व शांति का एक मूल आधार राष्ट्रों की सम्प्रभुता का सम्मान है। अपेक्षाकृत शक्तिशाली देश आर्थिक व सैन्य दबाव के माध्यम से दूसरे देशों की नीतियों को प्रभावित करने लगें तो अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में असंतुलन बढ़ जाता है। इससे कमजोर देशों में असुरक्षा भावना बढ़ाने से

वह भी सैन्य शक्ति को बढ़ाने के लिए प्रयासरत होने लगते हैं। जो भविष्य में युद्ध जैसे कारक को जन्म देता है और शांति भंग होती है तथा जिसका प्रभाव वैश्विक होता है। इसलिए आज आवश्यकता शक्ति के संतुलन की नहीं, बल्कि शांति-संतुलन बनाने की है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मतभेद स्वभाविक हैं। राष्ट्रों के हित, सीमाओं के विवाद और राजनीतिक दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं, लेकिन मतभेद का समाधान युद्ध ही हो, यह बात उचित नहीं लगती है। इसका कारण है कि युद्ध केवल दो देशों की सीमा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि ऊर्जा संकट, खाद्य कीमतों में वृद्धि, व्यापारिक अस्थिरता, महंगाई और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर उसका गम्भीर असर पड़ता है, जो सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करता है। इसके साथ ही एक देश की अस्थिरता अंततः दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और सामाजिक व्यवस्था को भी निश्चित रूप से प्रभावित करती है।

जब दुनिया की प्रभावशाली शक्तियां दूसरे सम्प्रभु देशों के भविष्य को लेकर ऐसे विचार सार्वजनिक रूप से रखते हैं, जिससे दूसरे देशों में असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है, तो निश्चित ही अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अस्थिरता बढ़ जाती है। इसी संदर्भ में हाल के दिनों में ट्रम्प द्वारा जारी एक विवादास्पद मानचित्र में कनाडा, ग्रीनलैंड, मैक्सिको और अन्य क्षेत्रों को अमेरिकी ध्वज के नीचे दिखाए जाने से सम्पूर्ण विश्व की चिंता को बढ़ा दिया है। इसी दौर में न्यू मैक्सिको का नाम न्यू अमेरिका करने जैसी टिप्पणी ने अंतरराष्ट्रीय जगत को अत्यंत चिंतित कर दिया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बनी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था राष्ट्रों की सीमाओं और सम्प्रभुता का सम्मान करने और विवादों का समाधान बातचीत तथा अंतरराष्ट्रीय कानून के माध्यम से करने का प्रावधान रखा है, परंतु महाशक्तियां इस सिद्धांत को कमजोर करती दिखाई देती है, जिसका प्रभाव केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहने वाला है।

हालांकि अमेरिका ने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, वैश्विक अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीक, मानवीय सहायता और अनेक बहुपक्षीय पहलों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यदि अमेरिका अपनी आर्थिक और सैन्य शक्ति के साथ कूटनीतिक संयम को प्राथमिकता देता है, तो वह वैश्विक शांति का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। महाशक्तियों की पहचान यह नहीं कि वह कितने राष्ट्रों की सीमाओं तक अपना प्रभाव बढ़ा सकता है, बल्कि उनकी पहचान अपनी शक्ति पर अत्यधिक संयम व नियंत्रण के साथ होनी चाहिए। अमेरिका का चीन के साथ, या फिर अमेरिका व रूस की प्रतिस्पर्धा को संघर्ष में बदलने से रोकना पूरी दुनिया के हित में रहेगा। संयुक्त राष्ट्र जैसी बहुपक्षीय संस्थाओं को अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान में केवल महाशक्तियों का वर्चस्व जैसे परिस्थितियां उत्पन्न न हों।

दुनिया को ऐसी राजनीति चाहिए जिसमें शक्ति हो, लेकिन शक्ति के साथ संयम भी हो, राष्ट्रीय हित हों, लेकिन उनके साथ वैश्विक उत्तरदायित्व भी हो, प्रतिस्पर्धा हो, लेकिन प्रतिस्पर्धा युद्ध में न बदले। आज दुनिया को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो युद्ध की घोषणा से पहले संवाद का अंतिम दरवाजा खटखटाए। विश्व शांति के लिए विवादों का समाधान संवाद से हो और शक्ति का प्रयोग स्थिरता कायम करने के लिए किया जाना चाहिए। ऐसी विश्व व्यवस्था व नियम बनाने की आवश्यकता है कि सभी राष्ट्र एक दूसरे राष्ट्र की सम्प्रभुता, स्वतंत्रता और सुरक्षा का सम्मान करें। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए 21 सितम्बर को विश्व शांति दिवस के रूप में याद किया जाता है।

विश्व शांति के लिए शक्ति की निरंतर प्रतिस्पर्धा, हथियारों की बढ़ती होड़, प्रभाव क्षेत्रों का विस्तार और संदेह की राजनीति को छोडकर संवाद, सह-अस्तित्व, सहयोग और साझा सुरक्षा की भावना के साथ आगे बढ़ाना पड़ेगा, जो स्थायी शांति की सम्भावना पैदा करेगा। महाशक्तियों को दुनिया का विश्वास जीतने जैसे पहल करनी पड़ेगी। सह-अस्तित्व के साथ मतभेदों के बावजूद साथ रहने की क्षमता विकसित करने आवश्यकता है। यदि शक्तिशाली राष्ट्र अपनी शक्ति का उपयोग भय पैदा करने के बजाय विश्वास पैदा करने में करें, यदि कमजोर राष्ट्रों की सम्प्रभुता का सम्मान हो और यदि विवादों का समाधान युद्ध के बजाय संवाद से खोजा जाए, तो विश्व में अशांति जैसी बातें अकल्पनीय लगेंगी।

सम्पूर्ण वैश्विक परिवेश में भारतीय सभ्यता का संदेश 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आज के विभाजित विश्व में सर्वाधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण बन चुका है, जो बताता है कि पूरी दुनिया का भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना तभी सार्थक होगी जब शांति को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी उतना ही आवश्यक माना जाए। संघर्ष की अग्रिम पंक्ति में खड़े सैनिकों से लेकर दुनिया में हर किसी को भूमिका निभानी है। हमें हिंसा, नफरत, भेदभाव और गरीबी, असमानता और अन्याय असमानता के खिलाफ लामबंद होकर एक-दूसरे का सम्मान करते हुए अहिंसा और निरस्त्रीकरण के साथ दुनिया की विविधता को अपनाते हुए वैश्विक शांति के मार्ग ढूंढना होगा। ■■■

विनीत उत्पल

मौन केवल चुप रहने का नाम नहीं, बल्कि शांति का सबसे प्रभावी रास्ता है। विश्व शांति दिवस पर यह समझना जरूरी है कि कई बार समस्या का हल बोलने में नहीं, मौन में छिपा होता है।

मौन से निकलता समस्याओं का हल

मौन केवल चुप रहने का काम नहीं है बल्कि यह शांति का रास्ता प्रशस्त करता है। इसके जरिए खुद को समझने, अलग-अलग विचारों को व्यवस्थित करने और तनावपूर्ण जीवन के खुद को अलग कर शांतिपूर्ण जीवन चुनने का अवसर मिलता है। तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय मौन रहकर किसी विषय या विवाद पर सम्यक दृष्टि से सोचने का अवसर मिलता है और इससे समाधानपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है। सिग्मंड फ्रायड कहते हैं, शब्दों में शक्ति होती है। ऐसे में कभी-कभी शब्दों से अधिक मौन प्रभावी होता है। स्वामी विवेकानंद ने भी विचारों में मन की एकाग्रता और आत्मनियंत्रण को विशेष महत्व दिया है। उनके कहने का अर्थ है कि जब बाहरी शोर कम हो तो मनुष्य अपने भीतर की शक्ति को पहचानने लगता है।

स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के दौर में गलत सूचनाओं की भरमार है। केवल डिजिटल फॉर्म पर ही नहीं बल्कि हमारे सामाजिक जीवन में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो भ्रामक जानकारियों का सम्प्रेषण करते हैं, दूसरों या प्रतिद्वंदियों के बारे में अफवाह या झूठी सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं, चारित्रिक हनन करने से बाज नहीं आते और किसी विषय पर अपनी जिम्मेदारियों की असफलता का ठीकरा दूसरों पर फोड़ते हैं। अभी भी लोगों में 'फूट डालो और राज करो' वाली मानसिकता नहीं गई है। ऐसे में जब हम मौन होते हैं, मनन के

साथ मंथन करते हैं तो मन-मस्तिष्क हमें अपने भीतर लौटने का अवसर देता है, विषयों और मुद्दों को गहरे से समझने का अवसर देता है। किसी के द्वारा भ्रामक सूचना दिए जाने पर भी हम चुपचाप सत्य को ढूंढ पाते हैं और भावावेश के बनिस्पत सटीक और सत्य के धरातल पर पहुंचने में सक्षम होते हैं। इससे हमारे अंतर्मन में सकारात्मकता आती है और हम संतुलित विचारों के साथ लोगों के सामने आते हैं।

कई बार सही समय पर कही गई बात से अधिक प्रभावी सही समय का मौन होता है। यह हमें दूसरों को ध्यानपूर्वक सुनने और उनकी भावनाओं को समझने की क्षमता भी देता है। जब हम मौन होते हैं, तो दूसरों की कही गई बातों पर विचार कर पाते हैं, उनके दर्द को, उनके परेशानियों को समझ पाते हैं या समझने के प्रयास में सफल होते हैं। सामने वाले के तर्क को जान पाते हैं। कई बार हमारे जीवन में ऐसे अवसर आते हैं, जब सामने वाला अपनी परेशानी, दर्द, समस्या को आपसे शेयर करना चाहता है। उसकी मनोदशा यह होती है कि समस्या का समाधान मिले या न मिले उसकी परेशानियों को कोई चुपचाप सुन ले। स्पष्ट बात है कि सम्प्रेषण के दौरान वह अपनी जुबान पर काबू नहीं रख पाता, गुस्से में आकर ऊंची आवाज में बात रखता है, कुछ अपशब्द भी कह डालता है। फिर कुछ क्षण बाद शांत हो जाता है. तभी उसे आत्मसंतोष होता है कि उसने अपनी सारी भड़ास निकाल ली और उसका मन शांत हो जाता है। अधिकतर मनुष्य की यही स्थिति है. वह परिवार, ऑफिस से लेकर मित्रों के बीच भी दिखाई पड़ती है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब सामने वाला मौन होकर उसकी बात सुनता है और सामने वाले को दर्शाता है कि वह उसकी बात गहनता से सुन रहा है. फिर पूरा वातावरण बदल जाता है और हम एक स्वस्थ वातावरण में समस्याओं के हल निकलने में सफल होते हैं।

विश्व के तमाम देश विभिन्न मुद्दों को लेकर एक-दूसरे से उलझते रहते हैं। समाज-परिवार के लोग भी इसी रास्ते पर होते हैं। जेन-जी भी काफी उतावलपूर्ण जिंदगी जी रहे हैं और उनमें झट से अपनी बात रखने की आदत बन चुकी है। उन्हें लगता है कि तुरंत अपनी बात रखना अधिकार है और लोकतंत्र ने यह ताकत उन्हें दी है। बात सही भी है लेकिन सामने वाले से किस तरह बात की जाए यह भी तो उनका कर्तव्य होना चाहिए। अधिकतर हम सोचते हैं कि किसी भी विषय पर हम तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देंगे, जवाब नहीं देंगे तो सामने वाले हमें बेवकूफ समझेगा। ऐसी मानसिकता में हम बिना सोचे-समझे अपनी बात रखते हैं, किसी विषय पर बोलने से पहले होमवर्क नहीं करते, परिणामस्वरूप विवाद या मतभेद होने पर क्रोध करके, अनर्गल वक्तव्य देकर, अनावश्यक शब्दों का प्रयोग कर, धमकी देकर सामने वाले को चुप कराने या दबाव बनाने का प्रयास करते हैं। इस स्थिति में विवाद और बढ़ता जाता है। ऐसे में मौन काफी सार्थक सिद्ध होता है और शांति को स्थापित करता है।

मौन का हमारे जीवन के साथ-साथ स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नियमित रूप से कुछ समय शांत रहने से मानसिक तनाव कम करने, एकाग्रता बढ़ाने और आत्मचिंतन में सहायता मिलती है। मौन रहना और खुद को विपरीत परिस्थिति में खुद को मौन रख पाना एक साधना है। मौन हमें अपनी प्राथमिकताएं तय करने के साथ-साथ भावनाओं और व्यवहार को समझने का भी अवसर देता है। इससे धैर्य, आत्मनियंत्रण और सकारात्मक सोच विकसित होती है। ये तीनों हमारी जिंदगी में महत्वपूर्ण तत्व हैं जो सिर्फ जीवन को सफल ही नहीं बनाते बल्कि सफल जीवन जीने की दिशा और दशा तय करते हैं।

सामाजिक और पारिवारिक जीवन में मौन का अर्थ समस्याओं से भागना या अपनी बात हमेशा दबा देना समझा जाता है। जबकि ऐसा नहीं है। बौद्ध परम्परा में सम्यक वाणी बोलने और अनावश्यक वाणी से बचने की सलाह दी गई है। मतलब यह कि जहां बोलना आवश्यक हो, वहां स्पष्ट और उचित शब्दों में बोलना भी चाहिए। वास्तविक मौन होता है, जो हमें सही समय पर सही शब्द चुनने की समझ देता है, सही वाक्य चुनने का अवसर देता है। मौन बाहर के शोर से दूरी ही नहीं, बल्कि भीतर की शांति से जुड़ने का माध्यम है।

मौन का अर्थ केवल बोलना बंद कर देना नहीं होता है। यह वह अवस्था है, जिसमें मनुष्य दूसरों को सुनने के साथ-साथ स्वयं को भी सुनना शुरू करता है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि यह आत्मचिंतन, भावनात्मक नियंत्रण और विचारों को व्यवस्थित करने का अवसर देता है. तभी वे कहते हैं कि हर बात का उत्तर शब्दों में देने की अपेक्षा मौन सबसे परिपक्व उत्तर देता है। विदित हो कि हमारा अंतर्मन दुनिया के विभिन्न विषयों, अंतर्द्वंदों, मानसिक उथल-पुथल सहित तमाम शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक सहित विभिन्न समस्याओं से हमेशा जूझता रहता है। ऐसे में जीवन में कुछ क्षणों का सार्थक मौन हमें बेहतर सोचने, बेहतर समझने और बेहतर व्यवहार करने में सहायता करता है, तभी हमारे जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है।

■■■

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
This Ganeshotsav, bring home a new beginning.
Happy Ganeshotsav!
TJSB Gold Loan
Turn Your Idle Gold Into Instant Funds.
Interest Rate Starting At 8.60%* p.a.
Loan Up ₹ 25 Lakhs*
Speedy Sanction & Disbursal of Loan
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204

चुप्पी व मौन के पीछे क्या कारण हो सकते हैं? क्या यह थकान है, मन की उथल-पुथल या खुद से मिलने का मौन? इसके पीछे का मनोविज्ञान क्या है, जानते हैं इस आलेख में।

रचना प्रियदर्शिनी

चुप-चुप हो, जरूर कोई बात है!

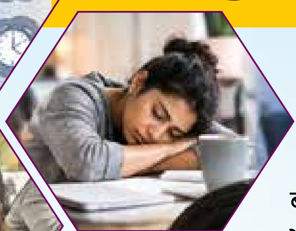

हमेशा हंसती-बोलती, चहकती रहने वाली शिखा पिछले कुछ समय से बेहद चुप रहने लगी थी। किसी भी बात का बड़ा नपा-तुला सा जवाब देती। अगर कोई कुछ पूछता, तो भी कुछ विशेष नहीं बताती। बस ठीक है कहकर बात को टालने का प्रयास करती। उसके परिवार वालों ने भी यह जानने की कोशिश नहीं की कि आखिर उसे हुआ क्या है।

कुछ महीने पहले तक शिखा ऐसी नहीं थी। सप्ताह में ऐसा कोई एक दिन शायद ही जाता, जब वह किसी फैमिली मेंबर या अपने फ्रेंड्स से बात न करती हो। खुद चाहे कितनी भी शारीरिक तकलीफ क्यों न हो, अगर किसी को कोई आवश्यकता पड़े, तो शिखा हमेशा सबकी सहायता के लिए खड़ी रहती। कभी किसी ने उसके चेहरे या उसकी बातों में कोई शिकायत या शिकन नहीं देखी। लेकिन अब वह ज्यादा कुछ बोलती ही नहीं। हंसती तो अब भी है, लेकिन उसकी हंसी में लोगों को वह बेलागपन नहीं दिखता, जो पहले दिखता था।

आखिर इस चुप्पी का कारण क्या है?

चाणक्य नीति में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि कम बोलना और चुप रहना जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है। कम बोलने वाले लोग अपने विचारों और भावनाओं को बेहतर ढंग से नियंत्रित कर पाते हैं और ऐसा कुछ कहने से बच जाते हैं, जिसके लिए बाद में उन्हें पछतावा करना पड़े। साथ ही, कम बोलने वाले लोग दूसरों की बातों को अधिक ध्यान से सुन सकते हैं और उनके अनुभवों से भी सीख सकते हैं।

ये बातें काफी हद तक सही हैं, लेकिन अगर कोई व्यक्ति स्वभाव से चंचल, चपल और बातूनी हो और वह अचानक से चुप्पी साध ले, तो यह सामान्य बात नहीं है। इसके कई कारण हो सकते हैं-

कई बार व्यक्ति लगातार काम करते-करते इतना थक जाता है कि किसी से बोलने-बतियाने की उसकी इच्छा भी खत्म हो जाती है। जी करता है, बस कहीं किसी जगह सुकून का एक कोना मिल जाए और वह वहां पसर कर लेट जाए या फिर कुछ पल के लिए आराम से बैठ जाए। अधिकतर घर-परिवार में होने वाले शादी-ब्याह, उत्सवों, त्योहारों या फिर ऑफिस में लम्बी मीटिंग या हेक्टिक प्रोजेक्ट वर्क निपटने के बाद कुछ समय तक शांति छाई रहती है। ऐसे में ज्यादातर लोग अपने लिए एक कंफर्ट स्पेस की खोज में रहते हैं। फिर जैसे-जैसे थकान मिटती है, लोग 'बैक टू वर्क' मोड में आ जाते हैं।

मन-मस्तिष्क में मची हो उथल-पुथल

जब व्यक्ति मानसिक रूप से थका होता है, तो भी वह चुप्पी की चादर ओढ़ लेता है। मानसिक थकान के कई कारण हो

सकते हैं-काम की अधिकता, पर्याप्त नींद की कमी, मोबाइल फोन का अधिक उपयोग, एक साथ कई सारे कामों में संलग्नता आदि। ऐसे लोगों का तनाव अधिकतर उनके मन-मस्तिष्क पर हावी रहता है और अगर लम्बे समय तक वे इसे अनदेखा करते रहें, तो वे क्रोनिक स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जायटी या अन्य मानसिक समस्याओं के शिकार हो सकते हैं। ऐसे लोगों को अक्सर रोजमर्रा के निर्णय लेने में भी परेशानी होती है। वे आज का काम कल पर टालने लगते हैं और इस कन्फ्यूजन में रहते हैं कि कौन-सा काम उन्हें पहले करना चाहिए और कौन-सा बाद में। अगर यह स्थिति लगातार बनी रहे, तो ऐसे लोग डिप्रेशन का शिकार हो सकते हैं।

'लोग क्या कहेंगे' फैक्टर रहता है हावी

हममें से अधिकांश लोग अपने जीवन में कोई काम बस इसलिए नहीं कर पाते या फिर कोई निर्णय इसलिए नहीं ले पाते, क्योंकि उन्हें मन-ही-मन इस बात का डर सताता रहता है कि लोग क्या कहेंगे? यानी ऐसे लोगों की लाइफ का कंट्रोल खुद उनके अपने हाथों में नहीं, बल्कि उन 'लोगों' या उस 'समाज' के हाथों में होता है, जिन्हें उनसे कोई लेना-देना नहीं होता। बावजूद इसके वे अपना छोटा-से-छोटा कदम भी 'लोगों' को ध्यान में रखकर लेते हैं और यही डर अक्सर उन्हें बेबाक होकर जीने, अपनी मर्जी से बोलने या कुछ करने से रोकता रहता है। हालांकि अपनी इच्छाओं को दबाकर दूसरों की इच्छा से जीवन जीने की यह प्रवृत्ति बेहद भयावह है। यह व्यक्ति को मानसिक कुंठा, अवसाद और विभिन्न प्रकार की शारीरिक-मानसिक व्याधियों का शिकार बना सकती है।

भावनात्मक अभिव्यक्ति की अक्षमता:

कई लोग जैसा सोचते हैं, समझते हैं या महसूस करते हैं, अक्सर उसे यथोचित रूप से शाब्दिक या व्यवहारिक रूप से अभिव्यक्त कर पाने में सक्षम नहीं होते। हो सकता है कि वे सामने वाले की किसी बात से सहमत न हों, लेकिन उससे यह बात कह नहीं पाते। इसकी कई वजहें हो सकती हैं। जैसे कि, अगर वे सामने वाले व्यक्ति से बहुत प्यार करते हों, तो उसे बुरा न लग जाए-यह सोचकर उससे असहमति प्रकट नहीं कर पाते।

जब कोई व्यक्ति परिस्थितिवश या फिर किसी अन्य मजबूरी में बोलना बंद कर दे, तो उसे चुप्पी माना जाता है। वहीं जब कोई व्यक्ति बिना किसी दबाव में आए, खुद अपनी मर्जी से बातचीत न करे, तो उसे मौन की संज्ञा दी जाती है। यह मौन व्यक्ति के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य-दोनों के लिए सर्वोत्तम होती है। ■■■

सामाजिक एकात्मता का पर्व

अनंत चतुर्दशी हमें अनंत विश्वास, निरंतर साधना, सामाजिक समरसता, त्याग, संयम और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व का संदेश देता है। गणपति की विदाई हमें अनासक्ति सिखाती है और अनंत सूत्र हमें अपने संकल्पों से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है।

अनंत चतुर्दशी

लवकुश तिवारी

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाई जाने वाली अनंत चतुर्दशी सनातन परम्परा का ऐसा पर्व है, जिसमें आध्यात्मिक साधना, पारिवारिक मंगलकामना, सामाजिक एकता और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता-चारों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

महाराष्ट्र सहित देश के अनेक भागों में यह दिन गणेशोत्सव के समापन और गणपति विसर्जन के कारण विशेष रूप से जाना जाता है, किंतु इसकी मूल आध्यात्मिक पहचान भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप की उपासना से जुड़ी है।

'अनंत' का अर्थ और आध्यात्मिक संदेश

'अनंत' अर्थात जिसका न आदि है, न अंत। सनातन दर्शन में यह परम सत्य, शाश्वत सत्ता और उस विराट चेतना का प्रतीक है, जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है। भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप की आराधना मनुष्य को यह स्मरण कराती है कि संसार में दिखाई देने वाला परिवर्तन क्षणभंगुर है, जबकि परम सत्ता शाश्वत है। इस पर्व का संदेश केवल सुख-समृद्धि की कामना तक सीमित नहीं है। यह मनुष्य को अपने जीवन में धैर्य, संयम, सत्यनिष्ठा और निरंतरता अपनाने की प्रेरणा देता है। सांसारिक कठिनाइयों के बीच भी विश्वास बनाए रखना और अपने कर्तव्यों से विमुख न होना अनंत व्रत की अंतर्धारा है।

अनंत सूत्र : विश्वास और संकल्प का प्रतीक

अनंत चतुर्दशी की सबसे विशिष्ट परम्पराओं में अनंत सूत्र धारण करना है। सामान्यतः यह 14 गांठों वाला पवित्र सूत्र होता है, जिसकी पूजा भगवान अनंत के प्रतीक के रूप में की जाती है। परम्परा के अनुसार पुरुष इसे दाहिनी और महिलाएं बाईं भुजा पर धारण करती हैं। 14 गांठों को विभिन्न धार्मिक परम्पराओं में 14 लोकों तथा अनंत व्यापकता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। उत्तर भारत में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र में इस दिन को अनंता भी कहा जाता है। यह सूत्र केवल बाहरी रक्षा का प्रतीक नहीं, बल्कि एक संकल्प है-धर्म, सदाचार और ईश्वर के प्रति आस्था को जीवन में बनाए रखने का। धागा मनुष्य को यह भी याद दिलाता है कि जीवन में सम्बंध, जिम्मेदारियां और मूल्य निरंतर निभाने होते हैं।

अनंत व्रत और कथा की परम्परा

अनंत चतुर्दशी से जुड़ी व्रत-कथा में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा पांडवों को अनंत व्रत का महत्व बताए जाने की मान्यता मिलती है। कथा-परम्परा में संकटों से घिरे मनुष्य द्वारा भगवान अनंत की शरण ग्रहण करने और श्रद्धापूर्वक व्रत करने से जीवन में स्थिरता एवं मंगल की प्राप्ति का संदेश मिलता है। विभिन्न क्षेत्रों में कथा के स्वरूप और पूजा-विधि में कुछ भिन्नताएं मिलती हैं, किंतु केंद्रीय भाव भगवान के अनंत स्वरूप के प्रति समर्पण ही है।

व्रती इस दिन स्नान के बाद संकल्प लेकर भगवान विष्णु अथवा अनंत पद्मनाभ की पूजा करते हैं। पंचोपचार या षोडशोपचार पूजा, पुष्प, फल, नैवेद्य, दीप-धूप तथा अनंत सूत्र का पूजन किया जाता है। अनेक परिवारों में विष्णु सहस्रनाम, अनंत व्रत कथा

और भगवान विष्णु के मंत्रों का पाठ भी किया जाता है।

गणेशोत्सव का भावपूर्ण समापन

महाराष्ट्र में अनंत चतुर्दशी का दूसरा अत्यंत व्यापक रूप गणेश विसर्जन है। गणेश चतुर्थी से प्रारम्भ हुआ सार्वजनिक और पारिवारिक गणेशोत्सव इसी दिन अपनी चरम परिणति तक पहुंचता है। श्रद्धालु ढोल-ताशों, भजनों और 'गणपति बप्पा मोरया' के जयघोष के साथ गणेश प्रतिमा को विसर्जन के लिए ले जाते हैं। यह विदाई वस्तुतः विरह नहीं, बल्कि भारतीय दर्शन का अत्यंत गहरा संदेश है। जिस गणेश तत्व का कुछ दिनों तक घर और सार्वजनिक मंडप में पूजन किया गया, उसे अंततः पंचतत्वों में विलीन कर दिया जाता है। आगमन उत्सव है तो विसर्जन आत्मचिंतन। यह मनुष्य को सिखाता है कि संसार में प्राप्त हर वस्तु से प्रेम करें, उसका सम्मान करें, लेकिन उसके प्रति अनावश्यक आसक्ति न रखें।

सामाजिक एकता का विराट उत्सव

अनंत चतुर्दशी ने गणेशोत्सव के माध्यम से सामाजिक जीवन को भी एक नई ऊर्जा दी है। सार्वजनिक गणेशोत्सव में जाति, भाषा, आर्थिक स्थिति और सामाजिक स्तर की सीमाएं पीछे छूट जाती हैं। विभिन्न आयु और वर्गों के लोग एक साथ आयोजन करते हैं, सेवा करते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और विसर्जन यात्रा में सहभागी बनते हैं। इस दृष्टि से यह पर्व 'मैं' से 'हम' की यात्रा का प्रतीक है। मंडपों में होने वाले रक्तदान, स्वास्थ्य शिविर, अन्नदान, सामाजिक जागरूकता और सांस्कृतिक कार्यक्रम उत्सव को समाजोपयोगी स्वरूप प्रदान करते हैं। श्रद्धा जब सेवा से जुड़ती है, तभी उसका सामाजिक प्रभाव व्यापक होता है।

पर्यावरण संरक्षण की नई जिम्मेदारी

विसर्जन की परम्परा हमें प्रकृति से हमारे सम्बंध का भी स्मरण कराती है। पारम्परिक मिट्टी की प्रतिमा का जल में विलय पंचतत्वों में लौटने की भारतीय अवधारणा से जुड़ा है। आधुनिक समय में प्लास्टर, रासायनिक रंगों और अन्य गैर-जैविक सामग्री से होने वाले प्रदूषण ने नई चुनौतियां पैदा की हैं। इसलिए आज आवश्यकता है कि श्रद्धा और पर्यावरण संरक्षण को परस्पर विरोधी न मानकर पर्यावरणपूरक उत्सव की दिशा में आगे बढ़ा जाए। कृत्रिम विसर्जन कुंडों का उपयोग, शाडू मिट्टी की प्रतिमाएं, प्राकृतिक रंगों का प्रयोग, प्लास्टिक से परहेज और निर्माल्य का उचित प्रबंधन-ये ऐसे उपाय हैं, जिनसे परम्परा भी सुरक्षित रह सकती है और प्रकृति भी।

■■■

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

ईमेल - hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ब्रिक्स की आवाज दुनिया में गूंजी

सम्मेलन

रंजीत कुमार

जब दुनिया की दृष्टि नई दिल्ली पर टिकी थीं, तब ब्रिक्स शिखर सम्मेलन ने साबित कर दिया कि भारत मतभेदों के बावजूद आम सहमति बना सकता है।

नई दिल्ली में विगत 12-13 सितम्बर को 11 सदस्य देशों वाले संगठन ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन का एक साझा नई दिल्ली घोषणापत्र जारी होने के साथ सफल समापन हुआ। भारतीय वार्ताकारों की प्रभावशाली कूटनीति के कारण ब्रिक्स के 11 सदस्य देशों के बीच आम राय बनाने में सफलता मिली तो दुनिया भर में यह संदेश गया कि भारत विभिन्न मत और परस्पर विरोधी हितों वाले देशों को साथ लेकर चल सकता है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन जब शुरू हुआ तो सदस्य देशों के बीच चल रहे मनमुटाव और तनावपूर्ण रिश्तों के कारण राजनयिक हलकों की इस बात पर दृष्टि थी कि क्या भारत मेजबान होने के नाते सभी सदस्य देशों के बीच आम सहमति बनवाने में सफल हो सकेगा। ब्रिक्स देशों की अलग अलग चिंताएं थीं-जैसे भारत का जोर आतंकवाद और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को लेकर था। जिस बारे में चीन का पाकिस्तान समर्थक बर्ताव जगजाहिर है, लेकिन चीन जब पहलगाम में पिछले साल हुए आतंकवादी हमले की निंदा करने वाला अंश को ब्रिक्स घोषणापत्र में शामिल करवाने में सफल हुआ तो भारतीय हलकों में चीन के प्रति सकारात्मक बदलाव देखा गया।

इसी पृष्ठभूमि में जब दुनिया के 11 देशों के राष्ट्रप्रमुख नई दिल्ली में मिले तो इस बात के कयास लगाए जा रहे थे कि सभी सदस्य देश क्या विवाद के मसलों पर कोई साझी राय व्यक्त कर सकेंगे। रुस और यूक्रेन के बीच गत 3 साल से चल रहे संघर्ष, फिलिस्तीन के गाजा पट्टी क्षेत्र में हजारों फिलिस्तीनियों का पलायन, ईरान पर इस्राइल व अमेरिका का एकतरफा सैन्य हमला, अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा रूस और ईरान के खिलाफ लगाए गए प्रतिबंध, भारत जैसे सामरिक साझेदारों पर लगाए गए एक तरफा टैरिफ, संयुक्त राष्ट् सुरक्षा परिषद का विस्तार, रुस से पेट्रोल नहीं खरीदने का अमेरिकी

दबाव आदि कई मसले हैं जो भारत जैसे विकासशील देशों के आर्थिक सामरिक हितों को प्रभावित करते हैं। ऐसे में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से यह आशा की जाती है कि अमीर ताकतवर देशों की दादागीरी के खिलाफ आवाज बुलंद करें।

यह आवाज नई दिल्ली से निकली तो सभी हैरान रह गए। आखिर जब ब्रिक्स के विदेश मंत्री शिखर सम्मेलन के लिए एकत्र हुए थे तब आम राय नहीं बन सकी थी। भारत इस तरह यह सिद्ध कर सका कि वह विश्व कूटनीतिक व सामरिक हलकों और मंचों पर अपनी रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। ब्रिक्स इस तरह विश्व रंगमंच पर अपनी उपयोगी भूमिका निभाने की ओर बढ़ता हुआ दिखा। इससे यह संदेश भी गया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मिलने से विश्व में सहयोग और शांति का वातावरण बनाने में भारत कितना प्रभावशाली साबित हो सकता है।

2001 में केवल भारत, ब्राजील, रूस और चीन को एक मंच पर लाकर ब्रिक की परिकल्पना साकार की गई थी, लेकिन बाद में इसमें जब दक्षिण अफ्रीका को भी शामिल किया गया तो इसे ब्रिक्स कहा गया। जिसने विश्व मामलों में सक्रिय दखल देना शुरू किया और अब जब इसका विस्तार हो कर इसमें 11 देश शामिल हो चुके हैं तो यह माना जाना चाहिए कि ब्रिक्स जल्द ही अमेरिका व पश्चिमी देशों के विश्व में दादागीरी दिखाने वाले संगठनों और गुटों के लिए एक चुनौती बन सकता है।

भारत इस तरह यह सिद्ध कर सका कि वह विश्व कूटनीतिक व सामरिक हलकों और मंचों पर अपनी रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। ब्रिक्स इस तरह विश्व रंगमंच पर अपनी उपयोगी भूमिका निभा सकता है। ब्रिक्स में नेतृत्वकारी भूमिका निभाने से भारत की यह छवि बनेगी कि उसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता मिलने से विश्व में सहयोग और शांति का माहौल बनाने में भारत कितना प्रभावशाली हो सकता है।

ब्रिक्स के सदस्य देशों की कुल जीडीपी दुनिया के अनुपात में 40 प्रतिशत है जब कि यह दुनिया के बीच एक चौथाई व्यापार करता है। इनके बीच आपसी आर्थिक व्यापार और वित्तीय लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए कई व्यवस्थाएं लागू की जा रही हैं। ब्रिक्स के सदस्य देश आपस में अपनी स्वदेशी मुद्रा में लेनदेन करें और भारत की यूपीआई जैसी भुगतान व्यवस्था तीन देशों भारत-चीन और रुस के बीच एक ब्रिक्स पेमेंट सिस्टम का भी प्रस्ताव भविष्य में लागू हो सकता है। अन्य छोटे विकासशील देशों को सहायता के लिए ब्रिक्स विकास बैंक कुछ सालों से सक्रिय हो चुका है। आपसी व्यापार और वित्तीय लेनदेन बढ़ाने की इन पहलों से अमेरिका का चिंतित होना स्वाभाविक है, क्योंकि उसे लग रहा है कि कहीं ब्रिक्स देश आपस में अपनी मुद्राओं का चलन करने लगें तो इससे अमेरिकी डॉलर का एकाधिकार टूट सकता है। लेकिन ब्रिक्स की अहमियत विशेषकर दक्षिण के देशों को अपने पांवों पर खड़ा होने के लिये रचनात्मक योगदान देने में है ताकि छोटे विकासशील देश अपनी आर्थिक क्षमताओं का दोहन अमीर विकसित देशों के हाथ करवाने से बच सकें। अगले साल जब ब्रिक्स की शिखत बैठक चीन आयोजित करेगा तब भी वहां दुनिया की दृष्टि भारत पर भी होगी।

■■■

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने तारण कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

प्रतिवर्ष 25 सितम्बर को मनाया जाने वाला विश्व फार्मासिस्ट दिवस स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था के उन महत्वपूर्ण कर्मयोगियों को समर्पित है, जो दवा और मरीज के मध्य एक विश्वसनीय एवं प्रमाणिक सेतु का कार्य करते हैं। यह दिवस फार्मासिस्टों की भूमिका, उनके समर्पण तथा जनस्वास्थ्य के प्रति उनके अमूल्य योगदान को सम्मान देने का अवसर प्रदान करता है। इंटरनेशनल फार्मास्युटिकल फेडरेशन (एफआईपी) द्वारा वर्ष 2009 में इसकी शुरुआत की गई थी, जबकि 25 सितम्बर की तिथि इसलिए निर्धारित की गई क्योंकि इसी दिन वर्ष 1912 में एफआईपी की

जेनेरिक व फार्मासिस्ट बेहतर स्वास्थ्य की साझेदारी

विश्व फार्मासिस्ट दिवस - 25 सितम्बर

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

जेनेरिक दवाएं ब्रांडेड दवाओं के समान प्रभावी होने के साथ-साथ सस्ती होती हैं, जिससे आमजन की स्वास्थ्य सेवाएं अधिक किफायती और सुलभ बनती हैं। जागरूक फार्मासिस्ट और गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं की साझेदारी ही स्वस्थ एवं समानतापूर्ण समाज के निर्माण की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।

स्थापना हुई थी। यह दिवस न केवल दवाओं के सुरक्षित और प्रभावी उपयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने का संदेश देता है, बल्कि यह भी रेखांकित करता है कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को जनसामान्य तक पहुंचाने में फार्मासिस्टों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है।

आज बढ़ती स्वास्थ्य लागतों और महंगे चिकित्सा उपचार के इस दौर में फार्मासिस्टों की भूमिका केवल दवाओं के वितरण तक सीमित नहीं रह गई है। वे मरीजों को सही दवा के चयन, उसकी उचित मात्रा, सेवन की विधि तथा सुरक्षित उपयोग के सम्बंध में आवश्यक परामर्श देकर उपचार प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं। विशेष रूप से जेनेरिक दवाओं के प्रति जनजागरूकता बढ़ाने और उनसे जुड़े भ्रमों को दूर करने में उनका उल्लेखनीय योगदान है। यही कारण है कि विश्व फार्मासिस्ट दिवस और जेनेरिक दवाओं की अवधारणा एक-दूसरे की पूरक प्रतीत होती है, क्योंकि दोनों का साझा उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को आमजन के लिए अधिक सुलभ, किफायती और प्रभावशाली बनाना है।

जेनेरिक दवाएं वे दवाएं होती हैं जिनमें ब्रांडेड दवाओं के समान सक्रिय रासायनिक तत्व मौजूद होते हैं। इनके प्रभाव, सुरक्षा और चिकित्सकीय उपयोग में कोई अंतर नहीं होता, लेकिन इन्हें किसी विशेष ब्रांड नाम के बजाय उनके वास्तविक रासायनिक नाम से बेचा जाता है। उदाहरण के लिए पैरासिटामॉल एक जेनेरिक नाम है, जबकि क्रोसिन या डोलो उसके ब्रांडेड रूप हैं। दोनों का चिकित्सीय प्रभाव समान होता है।

भारत में जेनेरिक दवाओं के क्षेत्र में कई प्रमुख कम्पनियां कार्य कर रही हैं। सन फार्मास्युटिकल इंडस्ट्रीज, सिप्ला, डॉ. रेड्डीज लेबोरेटरीज, ऑरोबिंदो फार्मा, ल्युपिन और मैनकाइंड फार्मा जैसी

कम्पनियां गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इन कम्पनियों ने वैश्विक स्तर पर भी भारत को जेनेरिक दवाओं के एक प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित किया है। जेनेरिक दवाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे कम कीमत पर अच्छी गुणवत्ता की दवा उपलब्ध कराती हैं। नियामक संस्थाओं की मंजूरी प्राप्त जेनेरिक दवाएं गुणवत्ता, सुरक्षा और प्रभावशीलता के मानकों पर खरी उतरती हैं। कम कीमत का कारण उनकी गुणवत्ता नहीं

बल्कि यह है कि इन पर विज्ञापन, ब्रांड प्रचार और शोध सम्बंधी अतिरिक्त लागत शामिल नहीं होती। इसी कारण वे ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 50 से 90 प्रतिशत तक सस्ती हो सकती हैं।

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अस्थमा और थायरॉयड जैसी दीर्घकालिक बीमारियों से पीड़ित हैं, जिनके लिए वर्षों तक नियमित दवाओं का सेवन करना पड़ता है। ऐसे मरीजों के लिए दवा का खर्च एक बड़ी चिंता बन जाता है। जेनेरिक दवाओं के उपयोग से यह आर्थिक बोझ काफी कम हो जाता है और मरीज बिना किसी वित्तीय दबाव के निरंतर उपचार प्राप्त कर सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए महंगी दवाएं खरीद पाना हमेशा सम्भव नहीं होता। ऐसे में जेनेरिक दवाएं जीवनरक्षक सिद्ध होती हैं। फार्मासिस्ट इन दवाओं की जानकारी देकर और उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करके स्वास्थ्य सेवाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में योगदान देते हैं। यही कारण है कि स्वास्थ्य विशेषज्ञ जेनेरिक दवाओं को स्वास्थ्य समानता स्थापित करने का प्रभावी साधन मानते हैं। हालांक जेनेरिक दवाओं के सम्बंध में नियमों और दिशा-निर्देशों की स्पष्टता को लेकर भी समय-समय पर बहस होती रही है। कुछ चिकित्सकों को प्रशासनिक या कानूनी जटिलताओं का भय रहता है, जिसके कारण वे हमेशा जेनेरिक दवाएं लिखने में सहज अनुभव नहीं करते। अतः भारत सरकार ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना के अंतर्गत देशभर में संचालित जन औषधि केंद्रों पर उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाएं अत्यंत कम कीमतों पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। यह पहल लाखों परिवारों को चिकित्सा खर्च में राहत प्रदान कर रही है। कम कीमत पर अच्छी दवा मिलना हर मरीज का अधिकार है।

जेनेरिक दवाएं इस अधिकार को वास्तविकता में बदल रही हैं। यह सच है कि जेनेरिक दवाओं से जुड़े कुछ व्यावहारिक प्रश्न समय-समय पर सामने आते हैं। कुछ डॉक्टर गुणवत्ता, बायो-इक्विवेलेंस या उपलब्धता को लेकर चिंताएं व्यक्त करते हैं। कई बार स्थानीय स्तर पर सभी जेनेरिक विकल्प उपलब्ध नहीं होते, जिससे मरीजों को कठिनाई हो सकती है। इसके अलावा लोगों में यह भ्रम भी देखने को मिलता है कि कम कीमत वाली दवाएं कम प्रभावी होंगी। लेकिन जागरूकता बढ़ने के साथ ये भ्रांतियां तेजी से दूर हो रही हैं और अधिक से अधिक लोग जेनेरिक दवाओं को स्वीकार कर रहे हैं। ■■■

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

नकली दवाइयों का कारोबार

नकली दवाइयों के निर्माता और विक्रेता धन के लालच में न केवल लोगों की जान को खतरे में डाल रहे हैं बल्कि दूसरे देशों में भारत की छवि धूमिल होने का कारण भी बन रहे हैं।

वैश्विक पटल पर दवाइयों के निर्माण में भारत का अग्रणी स्थान है। एक अनुमान के अनुसार विश्व की 60% वैक्सीन और 20% जेनेरिक दवाएं भारत में ही बनती हैं। परंतु इसी के साथ नकली दवाओं के फलते-फूलते धंधे ने मरीजों के उपचार की अपेक्षा उनकी असामयिक मौतों का विकराल रूप भी धारण कर लिया है। एसोचैम यानी एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया, जो भारत का सबसे पुराना और प्रमुख शीर्ष व्यापार संघ और गैर-सरकारी औद्योगिक संगठन है, के अनुसार भारत में निर्मित लगभग एक चौथाई दवाईयां नकली या सबस्टैंडर्ड हैं यानी निर्धारित मानक के अनुरूप नहीं हैं। उनमें बुखार, शुगर, ब्लड प्रेशर, पेन किलर और यहां तक कि कैंसर तक की घटिया और नकली दवाइयां बाजार में कई प्रसिद्ध देसी और विदेशी कम्पनियों के नाम से चोरी-छिपे और कहीं-कहीं जागरूकता के अभाव में धड़ल्ले से बेची जा रही हैं। भारत में नकली दवाइयों का कारोबार प्रतिवर्ष लगभग 33% की तीव्रता से बढ़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में नकली दवाइयों का कारोबार लगभग 16.6 लाख करोड़ रुपए का है।

डॉ. कृष्णा नंद पांडेय

भारत में नकली दवाइयों के कुछ उदाहरण नकली दवाइयां / इंजेक्शन

नकली दवाओं के कारोबार का नेटवर्क पूरे देश में फैला है। मानव ही नहीं जानवरों की दवाइयां भी नकली बनाई और बेची जा रही हैं। इस काले धंधे के तार नकली दवानिर्माता

से लेकर बिचौलियों और खुदरा विक्रेताओं तक जुड़े हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भारत सहित चार देशों में नकली इंजेक्शन की उपलब्धता की जानकारी देने के बाद 5 सितम्बर, 2023 को भारत सरकार के डीसीजीआई यानी ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया द्वारा राज्यों और संस्थाओं में कड़ी निगरानी रखने और औचक निरीक्षण करने के आदेश जारी किए गए।

भारत में केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन यानी सीडीएससीओ (सेंट्रल स्टैंडर्ड ड्रग्स कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन) द्वारा विगत 5 वर्षों के दौरान दवाइयों के कुल लगभग 4,92,000 से अधिक नमूनों की जांच की गई, जिनमें 14,342 नमूने निर्धारित मानक के अनुरूप नहीं थे और 1593 नमूने तो पूरी तरह नकली पाए गए। वर्ष 2023-24 के दौरान दवाइयों के कुल 5,500 नमूनों की जांच करने पर 3.2 % नमूने सबस्टैंडर्ड/नकली पाए गए। दिनांक 7 मार्च, 2025 को उत्तर प्रदेश के भदोही में महाराष्ट्र की ब्रांड प्रोटेक्शन सर्विस तथा स्थानीय पुलिस ने नकली दवाइयों के कारखाने में बच्चों के जीवन रक्षक सिरप, लिवर की दवा और एक प्रसिद्ध कम्पनी के 'पेन बाम' समेत 7 प्रसिद्ध ब्रांड्स की नकली दवाइयां, फेविकोल, रैपर, शीशियां, स्टिकर और पैकिंग मशीन की बरामद की। विगत 25 मई, 2025 को बिहार के 'गया जी' में जीवन रक्षक दवाइयों के टैबलेट्स, इंजेक्शन और नशीली दवाइयां सहित लगभग 4 करोड़ रुपए मूल्य की नकली दवाएं जब्त की गईं। दिनांक 4 जून, 2025 को दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने कैंसर की नकली दवाओं के कारोबार से जुड़े एक अंतर्राज्यीय गिरोह के 6 सदस्यों को गिरफ्तार कर उनसे लाखों रुपए मूल्य की कैंसर की नकली दवाइयां बरामद कीं। 28 जून, 2025 को दिल्ली ड्रग्स कंट्रोल विभाग ने एक प्रसिद्ध दवा निर्माता कम्पनी के नाम से कोलेस्टेरॉल के इलाज में प्रयुक्त नकली दवाइयां बरामद कीं। 28 जून, 2025 को विभाग द्वारा जारी की गई विज्ञप्ति में हिमाचल प्रदेश के सोलन से 33, सिरमौर से 9 और ऊना से 3 दवा कम्पनियों द्वारा निर्मित दवाइयों के नमूने फेल होने की जानकारी दी गई। जुलाई, 2024 से जून, 2025 के दौरान देश में दावाओं के कुल 1324 सैंपल फेल हुए जिनमें 373 नमूने हिमाचल प्रदेश के ही थे। 29 जून, 2025 को उत्तराखंड के हरिद्वार में ब्रांडेड दवा कम्पनियों के नाम पर पैरासिटामॉल, पेन किलर और शुगर के इलाज में प्रयुक्त बड़ी संख्या में टैबलेट्स पकड़ी गईं। 30 जून, 2025 को राजस्थान के भिवाड़ी से नकली दवाई के कारोबार से जुड़े एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया।

दिल्ली का भागीरथ पैलेस वर्ष 1969 से थोक दवाइयों के व्यापार का प्रमुख केंद्र रहा है। पिछले तीन वर्षों में दिल्ली औषधि नियंत्रण विभाग और दिल्ली पुलिस ने छापेमारी कर 14 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की नकली दवाएं पकड़ी हैं।

नकली दवाइयां स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

नकली दवाइयां में प्रायः दवाई के असली तत्व यानी सक्रिय औषधि संघटन (एपीआई/एक्टिव फार्मास्युटिकल इनग्रेडिएंट) नहीं होते या बहुत कम मात्रा में होते हैं। किसी दवाई या टैबलेट का एपीआई बीमारी को ठीक करने या उसका असर दिखाने के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार होता है। ऐसी दवाइयों के सेवन से बीमारी तो ठीक नहीं होती, उल्टा सेहत और बिगड़ जाती है। एंटीबायोटिक दवाइयों में इसके कारण बैक्टीरिया और ताकतवर/आक्रामक बन जाता है। फार्मास्युटिकल कम्पनियां नकली दवाइयों में सीसा, चॉक पाउडर, ईंट का चूरा, कैंसर पैदा करने वाले रंग, सस्ता स्टेरॉयड, आदि हानिकारक तत्व मिलाती हैं। नकली दवाइयों में उनकी उपस्थिति किडनी (गुर्दे) और लिवर (यकृत) जैसे अति महत्वपूर्ण अंगों के क्षतिग्रस्त होने की पूरी सम्भावना होती है। बच्चों के कफ सिरप और बुखार कि नकली दवाइयों से बच्चों की मौत के मामले प्रायः प्रकाश में आते हैं। इन घटनाओं से लोगों का असली दवा पर से भी भरोसा टूटा है।

नकली दवाई की पहचान करना सम्भव

दवाइयां खरीदते समय कुछ छोटी-छोटी बातें नकली दवाइयों की गिरफ्त में आने से बचा सकती हैं। नकली दवाइयों की पैकिंग में आमतौर पर स्पेलिंग गलत होती है, उनका रंग फीका होता है, प्रिंटिंग में एकरूपता नहीं होती यानी वह टेढ़ी-मेढ़ी होती है, और उनके अधिकतम खुदरा मूल्य यानी एमआरपी अजीब ढंग से अंकित होते हैं।

नकली दवाइयों के विरुद्ध कानून

नकली दवाइयों के कारोबार पर नकेल कसने के लिए भारत सरकार द्वारा कड़े कानूनों का प्रावधान है। ड्रग्स और कॉस्मेटिक्स अधिनियम -1940 के अनुच्छेद 27 के अंतर्गत नकली दवा बनाना, बेचना गैर-ज़मानती अपराध है। अपराध साबित होने की स्थिति में 10 साल की कैद से लेकर उम्र कैद के साथ 10 लाख रुपए जुर्माने का प्रावधान है। नकली दवाई के सेवन से किसी रोगी की मृत्यु प्रमाणित होने पर आजीवन कारावास या फांसी तक की सजा हो सकती है। वर्ष 2022 में इस कानून को और कठोर बनाया गया।

■■■

विश्व अल्जाइमर दिवस- 21 सितम्बर

मानवीय मनःस्थिति को घेरने वाली व्याधियां आज आम हो गई हैं। बढ़ती आपा-धापी और प्रतिस्पर्धा ने मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं बढ़ा दी हैं। अल्जाइमर के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 21 सितम्बर को विश्व अल्जाइमर दिवस मनाया जाता है।

जब यादें बिखरनें लगें

डॉ. मोनिका शर्मा

मानवीय मनःस्थिति को घेरती व्याधियां अब आम हो चली हैं। बढ़ती आपा-धापी और विस्तार पाती प्रतियोगी सोच ने मन-मस्तिष्क से जुड़ी परेशानियां भी बढ़ा दी हैं। इस मोर्चे पर समय रहते सजग होना आवश्यक है। अल्जाइमर व्याधि को लेकर जन-जागरूकता लाने के लिए ही प्रतिवर्ष पूरे सितम्बर महीने को अल्जाइमर माह के रूप में मनाया जाता है। 21 सितम्बर को मनोभ्रंश की बीमारी के निदान और संवेदनशीलता के साथ इसके लक्षणों को समझने हेतु विशेष रूप से सजगता लाने का दिन है। यह दिन दुनियाभर में विश्व अल्जाइमर दिवस के रूप में मनाया जाता है।

समय रहते सजग हों-चिंतनीय है कि अल्जाइमर की व्याधि के समझने में अधिकांशतः देर हो जाती है। वर्ष 2026 के लिए विश्व अल्जाइमर दिवस की थीम भी 'जितनी जल्दी आपको पता चलेगा, उतना ही आप संभलने के प्रयास कर पाएंगे - मनोभ्रंश का निदान महत्वपूर्ण है' रखी गई है। समझना आवश्यक है कि बदलती मनःस्थिति को समझने के लिए अल्जाइमर के शिकार व्यक्ति को नहीं उसके स्वजनों-परिजनों को भी लक्षणों पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि धुंधलाती याददाश्त एक बड़ी जनसंख्या के लिए समस्या बन गई है। दिमाग की क्षमता का लगातार कम होते जाना अकेलेपन से लेकर अवसाद तक, कितनी ही स्वास्थ्य समस्याओं के बढ़ते जाने के डरावने हालात बना रहा है। इतना ही नहीं भूलने की आदत असुरक्षा का भी एक बड़ा कारण बन जाती है। दुर्घटनाओं को न्योता देने वाली साबित होती है। चिंतनीय है कि मनोभ्रंश की बीमारी से जूझने वालों के आंकड़े तेजी से बढ़ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के ताजा अनुमान के अनुसार दुनिया भर में 3.5 करोड़ से भी ज्यादा लोग मनोभ्रंश से पीड़ित हैं। दुनिया की बढ़ती जनसंख्या के कारण साल 2050 तक यह संख्या तिगुनी से भी अधिक बढ़कर 11.5 करोड़ तक पहुंच जाएगी। शोधकर्ताओं का कहना है कि वैश्विक स्तर पर हर 4 सेकंड में डिमेंशिया का एक नया मामला सामने आता है। हमारे देश में अल्जाइमर के शिकार लोगों की संख्या 60 लाख से ज्यादा है। विदित हो कि डिमेंशिया से जुड़ी सबसे आम परेशानी अल्जाइमर रोग है। अल्जाइमर का यह रोग व्यक्ति की भाषा और निर्णय लेने की क्षमता पर गहरा दुष्प्रभाव डालता है। इसके चलते बार-बार किसी सवाल या समझाइश को दोहराना, समय, तारीखों या जानी-पहचानी जगहों को लेकर भी भ्रमित होने की उलझी सी मनोदशा को सजग होना आवश्यक है। इसीलिए याददाश्त कम होने, सोचने की क्षमता घटने, व्यवहार में असहजता आने और रोजमर्रा की बातें तक भूल जाने जैसे सभी लक्षणों पर अवश्य ध्यान दें।

कारणों को समझें - घर का रास्ता भूल जाने की बात हो या सरल से हिसाब-किताब का तरीका याद न आना। हर बार कुछ भूल जाना हंसकर टाल देने जैसी बात नहीं होती। धीरे-धीरे स्मृति को कम करने वाली यह व्याधि साधारण कार्यों को करने की क्षमता भी खत्म कर देती है। इसीलिए सहज से बदलावों को भी नोटिस करना आवश्यक है। आधुनिकता के नाम पर अपने मन-मस्तिष्क पर निर्भरता कम करने वाली जीवनशैली को लेकर सोचना आवश्यक है। विचारणीय है कि बढ़ती तकनीकी सुविधाओं ने भी लोगों की स्मरण शक्ति को कम किया है। विशेषकर स्मार्ट गैजेट्स ने विजुअल माध्यम भूमिका बढ़ा दी

है। हर मुट्ठी में मौजूद जानकारियों की स्क्रीन ने मस्तिष्क की सजगता घटा दी है। बदली जीवनशैली के इस दौर में दिमाग पर जोर डालकर सोचने और कुछ याद रखने की आवश्यकता कम हुई है। सेंटर्स फॉर डिसीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के अनुसार, अल्जाइमर्स आमतौर पर 60 साल की आयु के बाद व्यक्ति को अपना शिकार बनाता है पर कुंद होती याद्दाश्त अब केवल जीवन के आखिरी पड़ाव पर पहुंचे बुजुर्गों की परेशानी भर नहीं रही कम आयु के लोग भी अल्जाइमर रोग की चपेट में आ रहे हैं। विदित हो कि जमीनी जीवनशैली वाले हमारे देश में भी कमजोर होती याददाश्त के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं। चिंतनीय है कि यह केवल बातों-हालातों को भूल जाने भर की मनःस्थिति भर नहीं है। विस्मृति की इस बीमारी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मृत्यु तक के मामले में 7वां प्रमुख कारण माना है ।

बचाव के उपाय - अल्जाइमर की व्याधि से बचाव के लिए सबसे पहले तो जीवनशैली में बदलाव लाना आवश्यक है। प्रत्येक समय तकनीक पर निर्भर रहने की बजाय कुछ बातों, सूचनाओं, तारीखों या आयोजनों को याद रखने का प्रयास कीजिए। अल्जाइमर की चेतावनियों और संकेतों को गम्भीरता से लीजिए। धुंधलाती स्मृतियों की समस्या का सामना करने के लिए मन और मस्तिष्क को सजग-सक्रिय रखने की राह चुनें। साथ ही कुछ नया सीखने और प्राकृतिक परिवेश से जुड़ने के साथ ही शारीरिक रूप से सक्रिय रहना भी इस व्याधि के जाल से दूर रखता है। इतना ही नहीं एकाकी होते मानवीय जीवन में परिवेश से जुड़ाव के मार्ग खोजना भी आवश्यक हो चला है समग्र रूप से शारीरिक, सामाजिक और मानसिक गतिविधियों से दूरी स्मृति कम होने के जोखिम को और बढ़ाती है। परेशानी यह है कि इस समस्या को लेकर आज भी सजगता की कमी है। ऐसे में गलत धारणाओं को दूर करने और बीमारी के बारे में उचित समझ को बढ़ावा देने के प्रयास भी आवश्यक हैं। इस साल का विषय 'द अरलियर यू नो, द मोर यू कैन डू- ए डिमेन्शिया डाइग्नोसिस मैटर्स' भी यही संदेश लिए है। यह विषय समय पर प्रारम्भिक चेतावनियों और संकेतों के समझने के साथ ही सही चिकित्सा जांच की सजगता लाने से भी जुड़ा है। कई बार आयु बढ़ने के साथ याददाश्त कमजोर होने को एक सामान्य प्रक्रिया मान लिया जाता है। जबकि इस स्थिति में चिकित्सकीय जांच करवानी चाहिए। लोगों में जागरुकता लाने के पुख्ता प्रयास और जीवनशैली जनित कारणों को समझकर जीवन से जुड़ी बातों को ही भुला देने वाली इस बीमारी से बचने की राह निकालना बेहद आवश्यक है।

सहमति

बाईक की सवारी पे मन डोले...

बाइक टैक्सी का भविष्य इसलिए केवल गति में नहीं है। इसका असली भविष्य इसी बात में छिपा है कि भारत अपने मार्गों, युवाओं और निजी परिसंपत्तियों को कितनी बुद्धिमानी से आपस में जोड़ पाता है।

दीपक कुमार द्विवेदी

जब एक अकेला व्यक्ति चार पहिया वाहन लेकर सड़क पर निकलता है, तो मार्ग वही रहता है, पर बोझ कई गुना बढ़ जाता है। इसी ट्रैफिक के बीच मोटरसाइकिल और स्कूटर एक आशा बनकर उभर रहे हैं। यह केवल आने-जाने का साधन नहीं, बल्कि अनगिनत परिवारों की आजीविका और नगर की धड़कती गतिशीलता के उत्तर है। इसी यथार्थ को पहचानते हुए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने 2 सितम्बर 2026 को राज्यों से आग्रह किया कि निजी मोटरसाइकिल और स्कूटर को बाइक टैक्सी के रूप में चलाने की छूट दी जाए। उनका आकलन था कि इससे लगभग 8 करोड़ लोगों को आजीविका मिल सकती है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस पर अंतिम निर्णय राज्यों के हाथ में ही रहेगा।

यहीं से इस कहानी में दिलचस्प मोड़ आता है। परिवहन का अधिकार राज्यों के पास है। मोटर वाहन अधिनियम की धारा 66 कहती है कि किसी वाहन को परिवहन के काम में लाने के लिए परमिट चाहिए और परमिट की शर्तें तय करना राज्य परिवहन प्राधिकरण का काम है। गडकरी का यह आग्रह अर्थव्यवस्था से जुड़े होने के साथ हमारे संघीय ढांचे की परीक्षा भी है। गिग अर्थव्यवस्था भारत में अपनी जगह बना चुकी है। नीति आयोग के अनुसार 2020-21 में देश में लगभग 77 लाख गिग श्रमिक थे और 2029-30 तक यह आंकड़ा 2.35 करोड़ तक पहुंच जाएगा, जो अकृषि कार्यबल का लगभग 6.7 प्रतिशत होगा। बाइक टैक्सी इसी बदलती अर्थव्यवस्था की अगली कड़ी है। यहां किसी के घर में खड़ी मोटरसाइकिल स्वयं आमदनी देने वाली परिसम्पत्ति बन जाती है। जिस युवा के पास काम नहीं, पर मोटरसाइकिल है, वह सवारी ढोकर आमदनी कर सकता है। छोटे नगर का निवासी इसे पूरी आजीविका बना सकता है, तो महानगर में कार्यालय से लौटता कर्मचारी खाली समय में इससे आय बढ़ा सकता है।

यह आजीविका की उस पुरानी सोच को हिला देता है जहां 8 घंटे कार्यालय में बंधे रहना आवश्यक होता था। निजी वाहन का पंजीकरण और उसका व्यावसायिक उपयोग अलग है। यहीं से राज्यों की भूमिका शुरू होती है। राजस्थान ने यह राह बहुत पहले पकड़ ली थी। वर्ष 2017 में ही वहां की बाइक टैक्सी नीति ने मोटरसाइकिल को परिवहन वाहन के रूप में उपयोग करने और

अंतिम छोर तक की कनेक्टिविटी को अपना लक्ष्य बनाया था। महाराष्ट्र बाइक-टैक्सी नियम, 2025 के तहत संचालक के लिए लाइसेंस, पंजीकरण, बीमा, फिटनेस और परमिट अनिवार्य हैं। जीपीएस, आपातकालीन सहायता, विवरण, शिकायत-निवारण और अधिकतम 60 किमी प्रति घंटे की गति सीमा जैसी बातें इसमें शामिल हैं। राज्य ने इसे सार्वजनिक परिवहन से जोड़ा है। दिल्ली ने भी नवम्बर 2023 में मोटर वाहन एग्रीगेटर योजना लाकर ढांचा तैयार किया। कर्नाटक की कहानी इसके उलट रही है, जो बताती है कि अस्पष्टता कितनी बड़ी कठिनाई खड़ी करती है। 2025 में वहां के उच्च न्यायालय ने नियम न होने तक बाइक टैक्सी पर रोक लगा दी थी। जनवरी 2026 में खंडपीठ ने इस निर्णय को पलट दिया। फिर भी सितम्बर 2026 तक कर्नाटक परिवहन विभाग का कहना यही रहा कि केंद्र का आग्रह अपने-आप अनुमति नहीं बनता, निर्णय राज्य को लेना है।

यही टकराव आगे की राह दिखाता है। केंद्र आजीविका और सस्ती यात्रा की बात कर रहा है, तो राज्य सुरक्षा, परमिट, कर और नियमन चाहते हैं। कठिनाई तब आती है जब नियम धुंधले रह जाते हैं। बाइक टैक्सी का भविष्य महानगरों के मार्गों पर नहीं, बल्कि 'अंतिम छोर' की छोटी यात्राओं में है। मेट्रो स्टेशन से घर, रेलवे स्टेशन से कार्यालय तक की दूरियों में मोटरसाइकिल कार से तेज और ऑटो से सस्ती पड़ती है।

अगर इसे सार्वजनिक परिवहन से जोड़ दिया जाए, तो निजी कारों पर निर्भरता कम होगी। 8 करोड़ आजीविका का आंकड़ा अपने आप वास्तविकता नहीं बनेगा। इसके लिए राज्यों को चालक सत्यापन, पुलिस सत्यापन, बीमा, यात्री सुरक्षा, फिटनेस, डिजिटल रिकॉर्ड, किराए में पारदर्शिता और महिला सुरक्षा जैसे स्पष्ट विधान बनाने होंगे। आगे चलकर विद्युत दोपहिया वाहन इसमें नया मोड़ ला सकते हैं।

अगर बाइक टैक्सी विद्युत वाहनों के साथ आगे बढ़े, तो ईंधन घटेगा और प्रदूषण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। महाराष्ट्र ने विद्युत वाहनों को विशेष स्थान दिया है। ऐप के जरिए चलने वाला परिवहन अब कम्पनियों तक सीमित नहीं रहा। अगस्त 2026 में सहकारी मॉडल 'भारत टैक्सी' के विस्तार की जानकारी देते हुए केंद्र ने बताया कि 4 अगस्त तक इससे 8.48 लाख चालक जुड़ चुके थे और 44.27 लाख ग्राहक इसका उपयोग कर रहे थे। यह आंकड़ा बताता है कि डिजिटल मंच हमारी अर्थव्यवस्था का स्थायी अंग बन चुके हैं। तो बाइक टैक्सी का प्रश्न किसी एक कम्पनी तक सीमित नहीं।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

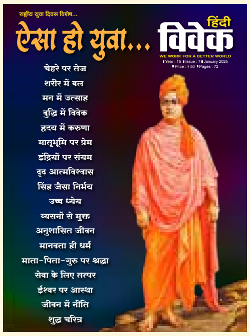

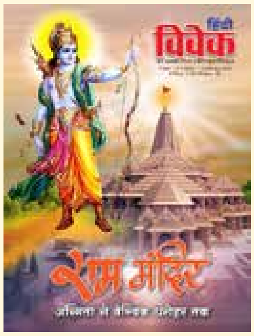

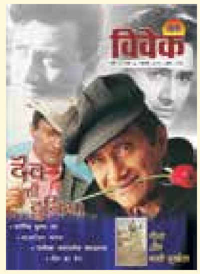

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

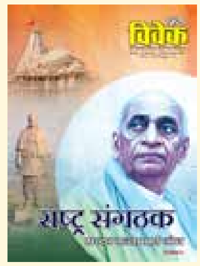

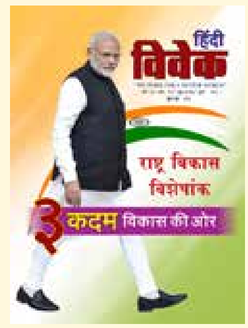

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर – 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई – 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

पहले रील्स फिर काम

सरकारी कर्मचारी की उंगलियां फाइल पर नहीं, रील्स पर दौड़ रही हैं। एक रील खत्म होती है, दूसरी शुरू। सरकारी कार्यालय में अब 'अगला नम्बर' फरियादी का नहीं, अगली रील का होता जा रहा है।

सोनम लववंशी

सरकारी कार्यालयों में फाइलें कभी-कभी इतनी तेजी से आगे बढ़ती हैं कि उन्हें देखकर व्यवस्था पर भरोसा होने लगता है। लेकिन यह तेजी अधिकतर फाइल के पन्नों में होती है, काम में नहीं। फाइल मेज पर पड़ी है, फरियादी सामने खड़ा है, घड़ी अपनी गति से चल रही है और कर्मचारी की उंगलियां फाइल पर नहीं, मोबाइल की स्क्रीन पर चल रही हैं। एक रील खत्म होती है और दूसरी शुरू। बाहर खड़ा नागरिक सोचता है कि शायद उसका नम्बर आने वाला है, जबकि भीतर बैठे कर्मचारी के लिए 'अगला नम्बर' अगली रील का है। यह दृश्य सुनने में भले ही मामूली सा लगे, पर इसके पीछे प्रशासनिक व्यवस्था की एक गम्भीर बीमारी छिपी है। कार्यालयीन समय में निजी मोबाइल पर रील्स, शॉर्ट्स और सोशल मीडिया में डूबे रहना समय की बर्बादी ही नहीं बल्कि यह उस जिम्मेदारी से भी पलायन है, जिसके बदले कर्मचारी को वेतन मिलता है और जनता को सेवा मिलने की आस रहती है। इसलिए यदि सरकार कार्यालयीन समय में निजी मोबाइल के गैर-आवश्यक प्रयोग पर अंकुश लगाने की तैयारी कर रही है तो इसे महज 'मोबाइल पर प्रतिबंध' की खबर समझना भूल होगी। यह वास्तव में सरकारी कार्य संस्कृति को आईना दिखाने का अवसर है।

डिजिटल तकनीक ने सरकारी कामकाज को तेज करने के लिए अनेक रास्ते खोले हैं। फाइलें डिजिटल हुईं, सेवाएं ऑनलाइन हुईं,

आवेदन घर बैठे होने लगे। लेकिन विडम्बना यह है कि जिस मोबाइल ने नागरिक को सरकारी कार्यालय की कतार से बाहर निकालने का दावा किया, वही कई जगह सरकारी कर्मचारी को काम की मेज से दूर ले जा रहा है। तकनीक समस्या नहीं है। समस्या तब शुरू होती है जब सुविधा जिम्मेदारी पर भारी पड़ जाती है। रील्स का आकर्षण समझना मुश्किल नहीं है। कुछ सेकंड का वीडियो, लगातार बदलती सामग्री और बिना किसी मेहनत के मिलने वाला मनोरंजन दिमाग को तत्काल संतुष्टि देता है। एक वीडियो के बाद दूसरा देखने की आदत व्यक्ति का ध्यान लम्बे और जटिल काम से हटाने लगती है। सरकारी काम में तो धैर्य और एकाग्रता की आवश्यकता और भी ज्यादा होती है। एक आदेश पढ़ना, नियम समझना, कागजात जांचना और फिर निर्णय लेना यह काम चंद सेकंड की रील की तरह नहीं चलता। लेकिन जब दिमाग लगातार त्वरित मनोरंजन का अभ्यस्त हो जाए तो फाइल का एक पन्ना भी बोझ लगने लगता है। फिर भी पूरी जिम्मेदारी मोबाइल पर डाल देना आसान रास्ता होगा। असली सवाल यह है कि कर्मचारी को काम के समय रील देखने का अवसर मिल कैसे रहा है? यहीं प्रशासनिक जवाबदेही का सवाल सामने आता है। जहां हर काम की समय सीमा तय हो, लम्बित मामलों की नियमित समीक्षा हो, प्रदर्शन का वास्तविक मूल्यांकन हो और काम में लापरवाही का परिणाम भी भुगतना पड़े, वहां कर्मचारी के लिए घंटों मोबाइल चलाना आसान नहीं होगा। पर जहां फाइल की देरी को सामान्य मान लिया जाए, जहां फरियादी को 'कल आना' कह देना सबसे आसान जवाब हो और जहां उपस्थिति को ही कार्यक्षमता का प्रमाण मान लिया जाए, वहां मोबाइल एक नया बहाना मात्र है। पहले कर्मचारी बातचीत, चाय और अखबार में समय काटता था, आज वही समय रील्स में कट रहा है यानी बीमारी नई नहीं है, उसका माध्यम नया है।

सरकारी नौकरी को लेकर समाज में लम्बे समय से एक विचित्र धारणा रही है कि नौकरी मिल गई तो जीवन सुरक्षित। इसमें कुछ गलत भी नहीं, आखिर स्थिर रोजगार हर व्यक्ति की आवश्यकता है। लेकिन सुरक्षा के साथ जिम्मेदारी भी आती है। सरकारी वेतन किसी कर्मचारी को महीने के अंत में मिलने वाली रकम नहीं है; वह जनता के कर से आता है। जिस नागरिक को सरकारी दफ्तर में घंटों खड़ा रहना पड़ता है, वही नागरिक उस व्यवस्था को चलाने के लिए कर भी देता है। इसलिए कर्मचारी का कार्यसमय निजी मनोरंजन का समय नहीं हो सकता। यहां सबसे बड़ा नुकसान काम में देरी का नहीं, जनता के विश्वास का होता है। कल्पना कीजिए, एक बुजुर्ग पेंशन के लिए कार्यालय पहुंचा है। कोई महिला प्रमाण पत्र के लिए आई है। किसान किसी योजना की स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा है। किसी विद्यार्थी को छात्रवृत्ति से जुड़ा कागजात चाहिए। इनके लिए सरकारी कार्यालय का चक्कर आसान नहीं होता। इसमें किराया, मजदूरी का नुकसान, समय और मानसिक तनाव सब शामिल होते हैं। दूसरी ओर कर्मचारी के लिए वही समय शायद 'बस दो मिनट' मोबाइल देखने का हो सकता है। यही दो मिनट जब बार-बार दोहराए जाते हैं तो किसी नागरिक के लिए पूरा दिन बन जाते हैं। इसलिए मोबाइल पर बिताया गया सरकारी समय वास्तव में कर्मचारी का निजी समय नहीं है। वह जनता के समय की कीमत पर खर्च हो रहा है।

सरकारी कार्यालयों में मोबाइल के दुरुपयोग का एक दूसरा पक्ष गोपनीयता और संस्थागत गरिमा भी है। संवेदनशील कागजातों के बीच निजी सोशल मीडिया गतिविधियां, सरकारी परिसर में रील बनाना या कार्यालयीन गतिविधियों को बिना अनुमति सोशल मीडिया पर डालना अनुशासनहीनता है। सरकारी संस्थान मनोरंजन के मंच नहीं हैं। वहां नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी, प्रशासनिक निर्णय और संवेदनशील सरकारी कागजात मौजूद होते हैं। इसलिए डिजिटल अनुशासन अब वैकल्पिक व्यवस्था नहीं, प्रशासनिक आवश्यकता बन चुका है। सरकार यदि सचमुच बदलाव चाहती है तो मोबाइल जमा कराने का आदेश जारी करके अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सकती। मोबाइल पर निगरानी के साथ फाइलों पर भी निगरानी करनी होगी। कितनी फाइलें लंबित हैं? कितने आवेदन समयसीमा से बाहर हैं? कितने मामलों में अनावश्यक देरी हुई? कौन-सा अधिकारी या कर्मचारी लगातार काम टाल रहा है? इन सवालों के जवाब भी उतनी ही गम्भीरता से खोजने होंगे। क्योंकि अगर मोबाइल हाथ से लेकर कर्मचारी को उसी कुर्सी पर खाली बैठा दिया गया तो क्या बदलेगा? रील नहीं चलेगी, लेकिन व्यवस्था फिर भी लचर रहेगी। इसलिए आवश्यकता मोबाइल विरोधी अभियान की नहीं, काम के प्रति जवाबदेही की संस्कृति बनाने की है। कार्यालयीन समय में गैर-जरूरी सोशल मीडिया पर रोक हो, संवेदनशील विभागों में मोबाइल उपयोग के स्पष्ट नियम हों और उल्लंघन पर कार्रवाई हो। साथ ही हर विभाग में काम की समयसीमा और परिणाम आधारित निगरानी भी अनिवार्य होनी चाहिए।

जन्म-दिवस - 20 सितम्बर

गायत्री के महान आराधक एवं गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा का जन्म 20 सितम्बर 1911 को हुआ था। अध्यात्म साधना और समाज सेवा को समर्पित उनके जीवन ने लाखों लोगों को गायत्री मंत्र और सकारात्मक जीवन की ओर प्रेरित किया।

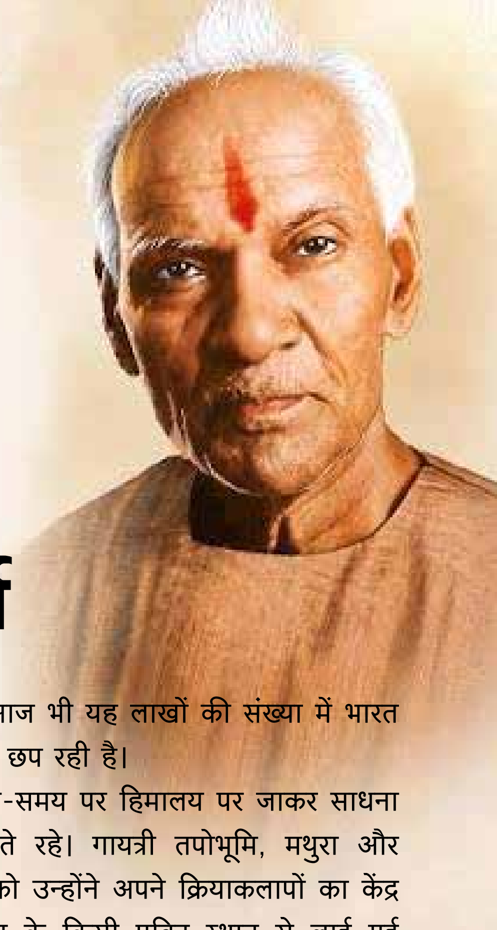

युग निर्माण के प्रवर्तक आचार्य श्रीराम शर्मा

गायत्री परिवार नामक संस्था के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा का जन्म 20 सितम्बर, 1911 को ग्राम आंवलखेड़ा (जिला आगरा, उ.प्र.) में हुआ था। यद्यपि वे एक जमींदार घराने में जन्मे थे, पर उनका मन प्रारम्भ से ही अध्यात्म साधना के साथ-साथ निर्धन एवं निर्बल की पीड़ा के प्रति संवेदनशील था। जब गांव की एक हरिजन महिला कुष्ठ से पीड़ित हो गई, तो बालक श्रीराम ने घर वालों का विरोध सहकर भी उसकी भरपूर सेवा की। उस महिला ने स्वस्थ होकर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिए।

15 वर्ष की अवस्था में वसंत पंचमी पर काशी में पंडित मदनमोहन मालवीय ने बालक श्रीराम को गायत्री की दीक्षा दी। तबसे उनका जीवन बदल गया। उसी समय उन्हें अदृश्य छायारूप में अपनी गुरुसत्ता के दर्शन हुए, जिसने उन्हें हिमालय आकर गायत्री की साधना करने का आदेश दिया। उनका आदेश पाकर वे हिमालय जाकर कठोर तप में लीन हो गए।

वहां से लौटकर वे समाजसेवा के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भी कूद पड़े। नमक आंदोलन के दौरान सत्याग्रह करने वे आगरा गए। पुलिस ने उनसे तिरंगा छीनने का बहुत प्रयास किया। उन्हें पीटा गया, पर उन्होंने झंडा नहीं छोड़ा। उन्होंने झंडा मुंह में दबा लिया, जिसके टुकड़े उनके बेहोश होने के बाद ही मुंह से निकाले जा सके। इस कारण उन्हें श्रीराम 'मत्त' नाम मिला।

1935 के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ। वे ऋषि अरविंद से मिलने पांडिचेरी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा गांधी जी से मिलने सेवाग्राम गए। वहां से लौटकर उन्होंने 'अखण्ड ज्योति' नामक मासिक पत्रिका प्रारम्भ की। आज भी यह लाखों की संख्या में भारत की अनेक भाषाओं में छप रही है।

इसी बीच वे समय-समय पर हिमालय पर जाकर साधना एवं अनुष्ठान भी करते रहे। गायत्री तपोभूमि, मथुरा और शांतिकुंज, हरिद्वार को उन्होंने अपने क्रियाकलापों का केंद्र बनाया। वहां हिमालय के किसी पवित्र स्थान से लाई गई 'अखण्ड ज्योति'का दीपक आज भी निरंतर प्रज्वलित है।

आचार्य श्रीराम शर्मा जी का मत था कि पठन-पाठन तथा यज्ञ करने एवं कराने का अधिकार सभी को है। अतः उन्होंने 1958 में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर दस लाख लोगों को गायत्री की दीक्षा दी। इसमें सभी वर्ग, वर्ण और अवस्था के लोग शामिल थे। उनके कार्यक्रमों की एक विशेषता यह थी कि वे सबसे सपरिवार आने का आग्रह करते थे। इस प्रकार केवल घर-गृहस्थी में उलझी नारियों को भी उन्होंने समाजसेवा एवं अध्यात्म की ओर मोड़ा। नारी शक्ति के जागरण से सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि इससे परिवारों का वातावरण सुधरने लगा।

आचार्य जी ने वेद, पुराण, उपनिषद, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, योगवाशिष्ठ, तंत्र एवं मंत्र महाविज्ञान आदि सैकड़ों ग्रंथों की व्याख्याएं लिखीं। वे बीच-बीच में साधना के लिए जाते रहते थे। इस दौरान सारा कार्य उनकी धर्मपत्नी भगवती देवी सम्भालती थीं। इसमें से ही 'युग निर्माण योजना' जैसे प्रकल्प का जन्म हुआ। इसके द्वारा आयोजित यज्ञ में सब भाग लेते हैं। अवैज्ञानिक एवं कालबाह्य हो चुकी सामाजिक रूढ़ियों के बदले नई मान्यताएं स्थापित करने का यह एक सार्थक प्रयास है। 2 जून, 1990 को गायत्री जयंती पर आचार्य जी ने स्वयं को परमसत्ता में विलीन कर लिया।

जन्म-दिवस - 25 सितम्बर

एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय

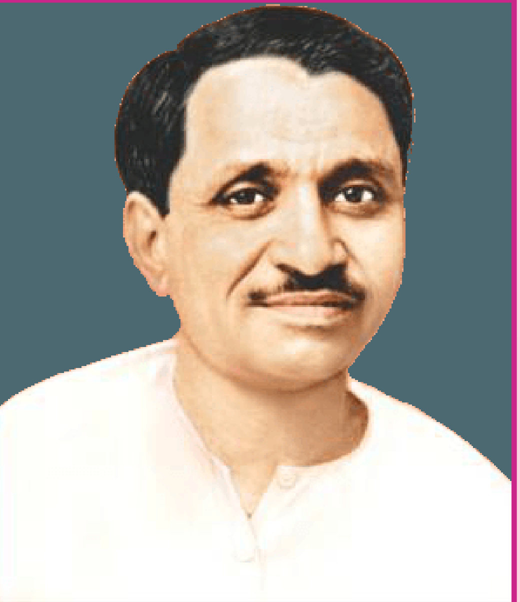

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 को हुआ था। अभावों और कठिनाइयों के बीच पले-बढ़े इस महान विचारक ने राष्ट्र के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

विजय कुमार

सुविधाओं में पलकर कोई भी सफलता पा सकता है, पर अभावों के बीच रहकर शिखरों को छूना बहुत कठिन है। 25 सितम्बर, 1916 को जयपुर से अजमेर मार्ग पर स्थित ग्राम धनकिया में अपने नाना पंडित चुन्नीलाल शुक्ल के घर जन्मे दीनदयाल उपाध्याय ऐसी ही विभूति थे।

दीनदयाल के पिता श्री भगवती प्रसाद ग्राम नगला चंद्रभान, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश के निवासी थे। 3 वर्ष की अवस्था में ही उनके पिताजी का तथा 8 वर्ष की अवस्था में माताजी का देहांत हो गया। अतः दीनदयाल का पालन रेलवे में कार्यरत उनके मामा ने किया। ये सदा प्रथम श्रेणी में ही उत्तीर्ण होते थे। कक्षा 8 में उन्होंने अलवर बोर्ड, मैट्रिक में अजमेर बोर्ड तथा इंटर में पिलानी में सर्वाधिक अंक पाए थे।

14 वर्ष की आयु में इनके छोटे भाई शिवदयाल का देहांत हो गया। 1939 में उन्होंने सनातन धर्म कालिज, कानपुर से प्रथम श्रेणी में बी.ए. पास किया। यहीं उनका सम्पर्क संघ के उत्तर प्रदेश के प्रचारक श्री भाऊराव देवरस से हुआ। इसके बाद वे संघ की ओर खिंचते चले गए। एम.ए. करने के लिए वे आगरा आए, पर घरेलू परिस्थितियों के कारण एम.ए. पूरा नहीं कर पाए। प्रयाग से इन्होंने एल.टी की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। संघ के तृतीय वर्ष की बौद्धिक परीक्षा में उन्हें पूरे देश में प्रथम स्थान मिला था।

अपनी मामी के आग्रह पर उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी। उसमें भी वे प्रथम रहे, पर तब तक वे नौकरी और गृहस्थी के बंधन से मुक्त रहकर संघ को सर्वस्व समर्पण करने का मन बना चुके थे। इससे इनका पालन-पोषण करने वाले मामा जी को बहुत कष्ट हुआ। इस पर दीनदयाल जी ने उन्हें एक पत्र लिखकर क्षमा मांगी। वह पत्र ऐतिहासिक महत्त्व का है। 1942 से उनका प्रचारक जीवन गोला गोकर्णनाथ (लखीमपुर, उ.प्र.) से प्रारम्भ हुआ। 1947 में वे उत्तर प्रदेश के सहप्रांत प्रचारक बनाए गए। 1951 में डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने नेहरू की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीतियों के विरोध में केंद्रीय मंत्रीमंडल छोड़ दिया। वे राष्ट्रीय विचारों वाले एक नए राजनीतिक दल का गठन करना चाहते थे। उन्होंने संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी से सम्पर्क किया। गुरुजी ने दीनदयाल जी को उनका सहयोग करने को कहा। इस प्रकार 'भारतीय जनसंघ' की स्थापना हुई। दीनदयाल जी प्रारम्भ में उसके संगठन मंत्री और फिर महामंत्री बनाए गए।

1953 के कश्मीर सत्याग्रह में डा. मुखर्जी की रहस्यपूर्ण परिस्थितियों में मृत्यु के बाद जनसंघ की पूरी जिम्मेदारी दीनदयाल जी पर आ गई। वे एक कुशल संगठक, वक्ता, लेखक, पत्रकार और चिंतक भी थे। लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन की स्थापना उन्होंने ही की थी। एकात्म मानववाद के नाम से उन्होंने नया आर्थिक एवं सामाजिक चिंतन दिया, जो साम्यवाद और पूँजीवाद की विसंगतियों से ऊपर उठकर देश को सही दिशा दिखाने में सक्षम है।

उनके नेतृत्व में जनसंघ नित नये क्षेत्रों में पैर जमाने लगा। 1967 में कालीकट अधिवेशन में वे सर्वसम्मति से अध्यक्ष बनाए गए। चारों ओर जनसंघ और दीनदयाल जी के नाम की धूम मच गई। यह देखकर विरोधियों के दिल फटने लगे। 11 फरवरी, 1968 को वे लखनऊ से पटना जा रहे थे। रास्ते में किसी ने उनकी हत्या कर मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर लाश नीचे फेंक दी। इस प्रकार अत्यंत रहस्यपूर्ण परिस्थिति में एक मनीषी का निधन हो गया।

संजुक्ता पराशर बनीं कोबरा की पहली महिला आईजी

सीआरपीएफ की कमांडो यूनिट कोबरा को पहली बार एक महिला आईजी मिली हैं। 2006 बैच की आईपीएस अधिकारी संजुक्ता पराशर को कोबरा का इंस्पेक्टर जनरल नियुक्त किया गया है। सीआरपीएफ मुख्यालय ने पिछले सप्ताह उनकी नियुक्ति का आदेश जारी किया था। वह 1996 बैच के आईपीएस अधिकारी दानेश राणा की जगह लेंगी।

विदेश से आई युवती, गौ सेवा में लीन

20 साल की उम्र में जर्मनी से भारत घूमने आईं फ्रेडरिक इरीना ब्रूनिंग की जिंदगी यहीं बदल गई। भगवद्गीता, योग और आध्यात्मिक साधना ने उन्हें मथुरा के राधा कुंड तक पहुंचाया। एक घायल बछड़े की सेवा से शुरू हुआ उनकी यात्रा हजारों बेसहारा गायों की सेवा तक पहुंच गया।

आज उनकी सुरभि गौसेवा निकेतन में 2,500 से अधिक गायों को आश्रय और देखभाल मिलती है। भारत को अपना घर मानने वालीं ब्रूनिंग को 2019 में सामाजिक कार्य के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

प्रियदर्शिनी राजपुरोहित को मिला वायुवीर परीक्षा में पहला रैंक

राजस्थान के बाड़मेर जिले के रामसर गांव की प्रियदर्शिनी राजपुरोहित ने वायुवीर परीक्षा में पूरे भारत में पहली रैंक प्राप्त किया है। इनके पिता किशनसिंह मनिहारी की दुकान चलाते हैं और दादा बीएसएफ में सब-इंस्पेक्टर रहे हैं। दादा की वर्दी से प्रेरित होकर प्रियदर्शिनी ने सीमित संसाधनों के बावजूद यह सफलता पाई है। बाड़मेर के पीजी कॉलेज से बीएससी और एनसीसी सी सर्टिफिकेट प्राप्त करने वाली प्रियदर्शिनी ने पहले प्रयास में असफल होने के बाद दूसरे प्रयास में ऑल इंडिया टॉप कर जिले का नाम रोशन किया है।

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका
हिंदी विवेक
We Work For Better World
पंजीयन करें
सेवा विवेक ग्रंथ
मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें
ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य
भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।
प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-
ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-
देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ
ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।
Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK
Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694
स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com